प्रकाशक की ओर से

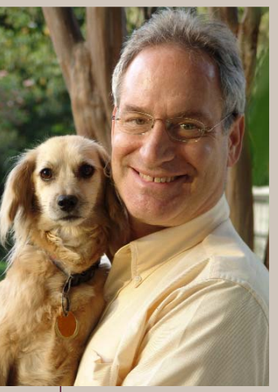

महात्मा गांधी ने कहा था, ''किसी देश की महानता और नैतिक प्रगति को पशुओं के प्रति व्यवहार से आंका जा सकता है।'' इस उदात्त विचार में मनुष्यों और पशुओं के बीच सदा से चले आ रहे मज़बूत बंधन की झलक दिखती है। श्रम, आहार या वस्त्रों के लिए पशुओं पर निर्भरता के अतिरिक्त भी संसारभर के लोग हज़ारों सालों से पशुओं को पालतू जीवों के रुप में अपनाते रहे हैं। पशुओं से इस प्राचीन सम्बन्ध के कारण ही शायद बहुत से लोग अपने पालतू जीवों से गहरा लगाव रखते हैं। अमेरिकी और भारतीय लोग जानवरों को अपने घरों में अपनाते हैं और अपने पारिवारिक जीवन में उन्हें विशेष महत्व देते हैं। लोग जानवरों को अपनाते हैं, पालते हैं, उन्हें प्यार करते हैं, उनका नामकरण करते हैं और जैसा कि लॉरिंडा कीज़ लौंग ने अपने आवरण लेख में बताया है, भटके, घायल या अनचाहे पशुओं की देखभाल के लिए संस्थाएं भी गठित करते हैं।

पालतू जीव रखने वाले ज़्यादातर लोग मानते हैं कि हम अपने पशुओं पर जो प्रेम लुटाते हैं, वह कई गुना बढ़कर हमें वापस मिलता है। (अपनी सम्पत्ति अपने पालतू पशुओं के नाम छोड़ जाने वाले लोगों की कहानियां हम अक्सर पढ़ते हैं। जूडी रिक्टर के लेख ''जब आपके वारिस हों झबरीले'' में ऐसी ही कुछ कथाएं प्रस्तुत हैं।)

बहुत से लोग मानते हैं कि पालतू जीवों की देखभाल हमारी आत्मा और देह, दोनों के लिए लाभकारी है। ''कैदियों से प्रशिक्षण पाते कुत्ते'' में एंड्रिया नील ऐसे अमेरिकी कार्यक्रमों के बारे में बता रही हैं जिनके अंतर्गत कैदियों को अंधे, बूढ़े, बीमार और अपंग लोगों की सहायता के लिए कुत्तों को प्रशिक्षित करने को प्रेरित किया जा रहा है। सच यह भी है कि सभी जीवों को ऐसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता, ''सेहत के लिए लाभकारी पालतू जीव'' में बताया गया है कि पालतू जीव आपके स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण और लाभकारी दीर्घकालिक प्रभाव डालते हैं।

स्पैन के हमारे सहकर्मियों को अपने पालतू जीवों से बहुत लगाव है। उनके आग्रह पर मैं इस आशा के साथ हमारी निक्की के बारे में बता रहा हूं कि आप भी अपने पालतू पशुओं के बारे में खास कथाएं हमें लिख भेजेंगे। कुछ साल पहले हमारे बच्चों ने जब अपने एक खास कुत्ते की मांग की तो मैं उनकी मांग को टाल नहीं पाया। यूं एक ठंडी सुबह मैं और मेरा बेटा एक जीव शरण केंद्र से एक मिलीजुली नस्ल का पिल्ला ले आए। निक्की ने हमारे दिलों में अपनी जगह बना ली। अब जब हमारे बच्चे बड़े होकर कहीं ओर रहने लगे हैं तो निक्की नई दिल्ली में हमारे बगीचे की मलिका है, वह मेरे पास सोती है और कुछ दुलार और खानेपीने की किसी चीज़ की आशा से भरी बड़े उत्साह से हमारे मेहमानों का स्वागत करती है।

आशा है कि आप पालतू जीवों के साथ-साथ आहार और संगीत जैसे उन सुखद विषयों पर प्रस्तुत लेखों को पसन्द करेंगे जिनका आनन्द भारतीय और अमेरिकी दोनों ही लेते हैं। ''टिक्का मसाला से आगे'' में सेबास्तियन जॉन अमेरिका में काम कर रहे शेफ़ द्वारा भारतीय व्यंजनों में लाए जा रहे बदलावों के बारे में बता रहे हैं तो रूमा दासगुप्ता हाल ही में लिखित और फोटोग्राफिक कृतियों के लिए दिया जाने वाला प्रतिष्ठित अमेरिकी पुलित्ज़र पुरस्कार पाने वाले पहले रॉक, संगीत कलाकार बॉब डिलॅन को लेकर पूर्वी भारत के सम्मोहन की पड़ताल कर रही हैं।

आपका मित्र,

अपने पालतू तोते के बारे में कॉलीन लाउरी कहती हैं, ''चिपर बहुत ध्यान से सुनता है।''

बिल्कुल बाएं: नई दिल्ली में फ्रेंडिकोज संस्था द्वारा बचाए गए कुत्ते इसकी संस्थापक गीता शेषमणि के साथ स्नेह जताते हुए।

मानव के सच्चे दोस्त

लॉरिंडा कीज़ लौंग

''एक कुत्ता अपनी पूंछ हिलाकर जितने सच्चे प्यार का इज़हार कर सकता है, वह कोई आदमी जीवनभर हाथ मिलाकर भी हासिल नहीं कर सकता।''

-जीन हिल, अमेरिकी लेखक

जब कॉलीन लाउरी हर दिन दफ़्तर से अपने कल्वर सिटी, कैलिफ़ोर्निया स्थित घर लौटती हैं तो उनका पालतू तोता चिपर उनकी कार की आवाज सुनकर जोश में आ जाता है और सीटी बजाकर उनका स्वागत करता है। वह कहती हैं, ''मेरे लिए यह स्वागत ठीक वैसे ही है जैसे कोई कुत्ता अपनी पूंछ हिलाकर करता है।''

चिपर उनकी कुर्सी के हत्थे पर बैठकर उनके साथ टेलिविज़न देखते हुए पर्दे पर दिखने वाले पक्षियों की नकल उतारता रहता है। लाउरी कहती हैं, ''मैं अखबार पढ़ती हूं तो वह खेल-खेल में अखबार के कोने फाड़ देता है। कभी-कभी अचानक गुनगुनाने लगता है और उसके गीत मुझे आनंदित कर देते हैं।''

चिप्पर की परम मित्र लाउरी कहती हैं कि इसकी सबसे प्यारी आदत यह है कि यह बड़े ध्यान से बात सुनता है, ''जब तक मैं बोलती रहती हूं वह बिना ध्यान भंग किए बड़े गौर से मेरा चेहरा देखता रहता है। जब तक मैं बोलना बंद नहीं कर देती तब तक वह अपनी पूरी दिलचस्पी जाहिर करता है।'' और यही नहीं, चिपर अपने मन की बात भी कहता है। ''जब मैं रसोई में जाती हूं तो वह चिल्लाता है 'ट्रीट, ट्रीट' (चिज्जी,चिज्जी)। या उससे पूछती हूं कि तुम्हें नींद आ रही है तो कहता है 'नीं ऽ... नीं ऽऽ'। मेरे कुछ मित्रों का ख्याल है कि वह आम पंछियों की तरह 'चीं... चीं' कर रहा होता है, लेकिन यह उनकी गलतफहमी ही है,'' लाउरी थोड़े मज़ाक में कहती हैं।

चिपर लाउरी के जीवन में बहुत सही समय पर आया जब उन्हें किसी ऐसे साथी की बहुत ज़रूरत थी जो उन पर ध्यान दे और धीरज से उनकी बात सुन ले। वह समझाती हैं, ''मेरे तलाक के बाद,जब बच्चे बड़े हो चुके थे, मैं उदास और खुद को अकेला महसूस कर रही थी... फिर एक शाम मेरी बेटी स्थानीय पालतू

स्टीव फ़ॉक्स

कैरॅल ग्रीनर

बिल्कुल ऊपर: कैरॅल फ़ॉक्स अपनी पालतू बिल्ली स्लॉकम के साथ। स्लॉकम भी कैरॅल के पति के साथ छह महीने के लिए समुद्री यात्रा पर गई थीं।

ऊपर: जानवरों के कल्याण के लिए काम करने वालीं मेनका गांधी नई दिल्ली में अपने उद्यान में उन 15 कुत्तों में से एक के साथ जिन्हें उन्होंने बचाया।

जीव बाज़ार से छोटा सुराखों वाला डिब्बा लिए आई। मैंने डिब्बा खोला तो उसमें से एक नन्हे से पंछी का डरा सा चेहरा झांक रहा था। बस, समझिए यह पहली निगाह में हुआ प्यार था।''

प्यार एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल पालतू जीव रखने वाले लोग बहुत स्वाभाविकता से करते हैं। लेकिन किसी पालतू पशु से लगाव न रखने वालों को यह शब्द कुछ परेशान ही कर देता है। कई लोग अपने पालतुओं से बच्चों की ही तरह व्यवहार करते हैं- वे उनके नाम रखते हैं, उन्हें अपने हाथों से खिलाते हैं, उन्हें 'पॉटी ट्रेन' करते हैं, गोद में बैठाते हैं और इस बात का बहुत ध्यान रखते हैं कि उनके पालतू अकेले घर से बाहर न निकल जाएं। भयंकर आपदाओं के बीच भी लोग अपने या दूसरों के पालतू जीवों के लिए अपनी जान खतरे में डाल देते हैं। एक उदाहरण है पूर्व फ़र्स्ट लेडी डॉली मैडिसन का। उन्होंने 1814 में ब्रिटिश फौजों के व्हाइट हाउस को आग लगाने से पहले भागते वक्त राष्ट्रपति से जुड़े कुछ ज़रूरी दस्तावेज़, एक ऐतिहासिक चित्र और अपना पालतू तोता साथ लिया था। कुत्तों-बिल्लियों-पक्षियों द्वारा अपने मालिक की जान बचाने के तो खैर बहुतेरे उदाहरण मिलते हैं। जब भी किसी व्यक्ति के पालतू जीव या उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो जीवित बचने वाला उसके शोक में डूब जाता है।

वेंचुरा, कैलिफ़ोर्निया निवासी लेखक और मीडिया सलाहकार स्टीव फॉक्स कहते हैं, ''मुझे लगता है कि हमारी बिल्लियां हमारे गोद लिए बच्चों जैसी ही हैं। हम हमेशा दो-तीन बिल्लियां रखते हैं ताकि वे अकेलापन महसूस न करें, कोई भी योजना बनाते हुए हम उन्हें ही ध्यान में रखते हैं। अब छुट्टियां ही देखिए- हम कभी दो हफ़्ते से ज़्यादा छुट्टी मनाने बाहर नहीं जाते क्योंकि हमारी बिल्लियां अकेली हो जाएंगीं।''

स्टीव फ़ॉक्स और उनकी शिक्षक एवं कलाकार पत्नी कैरॅल फ़ॉक्स ने अपने घर की बैठक में बिल्लियों के लिए बहुत सी चीज़ें रखी हैं। फ़ॉक्स बताते हैं, ''चढ़ने के लिए दो ढांचे, दर्ज़नों खिलौने, बिजली से गर्म रहने वाला बिस्तर, उनके पसंदीदा कंबल, खुजलाने के लिए लिए गत्ते के ढांचे। वे रात को हमारे बिस्तर में सोती भी साथ-साथ हैं और हमारे साथ ही उठती भी हैं।'' उनका बिल्ला कैपोन पिछले पैरों पर खड़ा होकर अपना पंजा उनके घुटनों पर रखता है। फ़ॉक्स कहते हैं,''यह इशारा कर रहा है कि काम करना बंद करो, अब चल कर टी.वी. देखो और मुझे गोद में बैठा लो। उन्हें अपना रूटीन पसन्द है।''

कई बरस पहले फ़ॉक्स अपना रूटीन तोड़कर अपनी दो सियामी बिल्लियों को समुद्र मार्ग से मेक्सिको की लम्बी यात्रा पर ले गए। वह याद करते हैं, ''तूफान आ रहा था और मैं बहुत डरा हुआ था। मैं रस्सी लेने नीचे गया, अल्मारी में से रस्सी निकाल रहा था तो वह निकल ही नहीं रही थी। मैं समझ नहीं पा रहा था कि हो क्या रहा है। आखिर मैंने झटके से रस्सी खींची, रस्सी के गुच्छे के साथ ही मेरा बिल्ला स्कप्पर भी बाहर गिरा। स्कप्पर तूफान के बीच खेलने के मूड में था! मुझे बहुत हंसी आई और फिर मैंने पाया कि मेरा तनाव भी गायब हो गया।''

फ़ॉक्स बताते हैं,''स्कप्पर और उसका भाई स्लॉकम हमारे घर के पिछवाड़े दफ़न हैं और स्लॉकम के लिए संगमरमर की छोटी सी स्मृति शिला भी है।'' फ़ॉक्स इसको लेकर थोड़े चिंतित होते हैं कि स्पैन के पाठक उनके बारे में क्या साचेंगे। ''20 बरस कैरॅल के पास रही हमारी एक बिल्ली हाल ही में नहीं रही, हमने उसका दाह संस्कार करवाया और उसकी अस्थियां लकड़ी के एक छोटे बक्से में मंगवाई।''

श्रीमती फ़ॉक्स कहती हैं, ''जब आप बिल्लियों की आंखों में झांकते हैं तो आप देखते हैं कि स्वर्ग किस तरह का होगा। बिल्ली के प्रेम से कोई शर्त नहीं जुड़ी होती और अपनी बिल्ली के लिए आपके प्रेम में भी 'लेकिन' जैसा कुछ नहीं होता।''

मनुष्यों और पशुओं का यह लगाव आदि काल से ही चला आ रहा है। बाइबल में आदम और हव्वा के किस्से से पता चलता है कि उन्होंने जानवरों को नाम दिए थे और उनसे बातें भी करते थे। मानव शास्त्रियों और प्राणी विज्ञानियों ने मनुष्य के प्राचीन अलावों के अवशेषों के आसपास कुत्तों की उपस्थिति के प्रमाण पाए हैं। लेकिन इसके साथ ही स्नेह के इस बंधन को अक्सर मनुष्य ही क्रूरता, उपेक्षा या अनदेखी के माध्यम से तोड़ते रहे हैं। जहां बहुत से अमेरिकी और भारतीय पशुओं से लगाव रखते हैं और अपने पालतू जीवों की संगति में आनन्द पाते हैं, वहीं कई लोग किसी कुत्ते को देखते ही पत्थर उठाते हैं, कार को धीमा करने की जहमत उठाए बिना बेझिझक किसी बिल्ली को कुचल डालते हैं, किसी गधे से इतना श्रम करवाते हैं कि वह दम तोड़ दे या सिर्फ 'मजे' के लिए किसी पशु को सताते हैं।

नई दिल्ली में फ्रेंडिकोज़ पशु शरणगृह और अस्पताल की सह-संस्थापक गीता शेषमणि बताती हैं कि अब लोग उनके संगठन जैसी संस्थाओं और एनिमल प्लेनेट और डिस्कवरी जैसे टेलिविज़न चैनलों के माध्यम से पशुओं के बारे में जानने लगे हैं। ''लेकिन कुछ लोग मानते हैं कि जानवर गंदे या अशुद्ध होते हैं, वे समझ नहीं पाते कि कोई कुत्ता क्यों भौंक रहा है या उनके घर के गेट पर क्यों बैठा है- और उस पर टूट पड़ते हैं। हमें लोगों को बिल्लियों के बारे में उनके अंधविश्वासों को लेकर भी शिक्षित करना होगा। बिल्लियां बहुत समझदार और स्नेही जीव होती हैं। लेकिन ज्यादातर बिल्लियां जब हमारे यहां पहुंचती हैं तो उनकी आंखें निकाल दी गई होती हैं, उन्हें जलाया गया होता है, हड्डियां तोड़ी गई होती हैं।''

अब कानूनों में भी बदलाव लाया जा रहा है। कैटरीना तूफान के बाद आई विनाशकारी बाढ़ के दौरान कई अमेरिकियों ने अपने पालतू पशुओं को छोड़कर सुरक्षित जगहों पर जाने से इनकार कर दिया, दूसरी ओर कई पशु लावारिस छूट गए। सरकारी अधिकारी और कानून निर्माता अब मानते हैं कि भविष्य के लिए आपदा प्रबंधन में मनुष्यों के साथ-साथ पशुओं की भी बेहतर देखभाल का प्रावधान होना चाहिए।

उधर हर बरस लावारिस छोड़ दिए जाने वाले या सड़कों पर जन्मने वाले लाखों कुत्ते-बिल्लियों के भविष्य को लेकर भी बहस छिड़ी है। अमेरिकी कानून के अनुसार लावारिस जानवरों को पशु शालाओं में बंद करके एक निश्चित अवधि तक इन्तज़ार किया जाता है कि उनके मालिक उन्हें ले जाएं या कोई और उन्हें ले ले। अगर उन्हें लेने कोई नहीं आता तो इन पशुओं को चिरनिद्रा में सुला दिया जाता है। द ह्यूमेन सोसाइटी ऑफ़ द युनाइटेड स्टेट्स के अनुसार अमेरिका के पालतू कुत्तों में से केवल 10 प्रतिशत और बिल्लियों में से केवल 18 प्रतिशत पशु शालाओं में लाए जाते हैं। हालांकि केंद्रीय आंकड़ा एजेंसी नहीं है, लेकिन सोसायटी का अनुमान है कि हर बरस 60 से 80 लाख लावारिस कुत्ते-बिल्लियां पशु शालाओं में लाए जाते हैं और इनमें से आधे चिरनिद्रा में सुला दिए जाते हैं। क्यों? क्योंकि व्यापक रूप से यह माना जाता है कि सभी पशुओं को पशु शालाओं में अच्छा जीवन सुलभ करवाना सम्भव नहीं है, खुले छोड़ दिए जाने पर वे भारी कष्ट पाएंगे और मनुष्यों के लिए खतरा भी बन जाएंगे। बहुत से भारतीय पशु शालाओं के लावारिस पशुओं को रोग प्रतिरोधक टीके लगाकर, उनकी नसबन्दी करके उन्हें फिर से खुला छोड़ देते हैं। अब अमेरिका में भी सीमित तौर पर, विशेषकर जंगली बिल्लियों के मामले में, ऐसा ही किया जा रहा है लेकिन यह विवादास्पद है।

पशु अधिकार कार्यकर्ता और सांसद मेनका गांधी कहती हैं कि पशुओं के प्रति भारतीय और अमेरिकी दृष्टिकोण में यही अंतर है। ''हम उन्हें मारते नहीं। अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनकी अच्छी देखभाल करते हैं। शहर में सब तरह के प्राणी क्यों न हों- हमारे बच्चे पंछी, आज़ाद जानवर, गायें और बन्दर देखने से वंचित क्यों रह जाएं? यह सब हमारे जीवनों को अधिक समृद्ध बनाते हैं।'' खुद उनके नई दिल्ली स्थित घर में 15 कुत्ते हैं जो सभी किसी के पालतू जीव थे लेकिन जिन्हें ज्यादा बीमार, ज्यादा बूढ़ा या ज्यादा बड़ा हो जाने पर घरों से निकाल दिया गया।

अमेरिका में पशुओं को संपत्ति के तौर पर देखा जाता है और इनके मालिकों को राज्य, राष्ट्र या शहर के कानूनों के मुताबिक उन्हें टीके लगवाने पड़ते हैं, उनकी देखभाल करनी पड़ती है और यह सुनिश्चित करना पड़ता है कि वे किसी को नुकसान न पहुंचाएं।

अमेरिका की पशु शालाओं में आने वाले अधिकांश कुत्ते कभी किसी के पालतू थे-उन्हें पिल्लों के रूप में खरीद कर पाला-पोसा गया और फिर घरों से निकाल दिया गया। गीता शेषमणि कहती हैं कि भारत में भी स्थिति इसी तरह की है। लगभग हर सुबह उन्हें फ्रेंडिकोज़ के गेट पर कुपोषण या बीमारी या चोट का शिकार, रात को चुपके से वहां छोड़ दिया गया कुत्ता मिलता है। एक बोरे में फेंक दिए गए एक प्यारे कुत्ते को सहलाते हुए वह कहती हैं, ''लोग पालतू जीव ले आते हैं और फिर उन्हें लगता है कि उनके पास उनकी देखभाल के लिए ज़रूरी समय या धन नहीं है।'' सड़क दुर्घटना में घायल, ज़हर के शिकार या पिटाई झेलने वाले कुछ कुत्तों को सहृदय लोग भी सड़क से उठाकर उनके यहां ले आते हैं।

कल्लू ऐसा ही एक कुत्ता है। काले रंग का यह सुंदर जीव बॉर्डर कॉली नस्ल का लगता है। अपने आसपास के लावारिस कुत्तों को भोजन करवाने वाली कुत्तों की कद्रदां मंजू सचदेवा को वह सड़क पर, घायल मिला था। उन्होंने उसे छह महीने अपने यहां रखकर उसकी सुश्रुषा की, उसकी नसबन्दी करवाई और फिर उसे बाहर छोड़ दिया- दरअसल उनके यहां पहले से ही तीन कुत्ते थे और चौथे के लिए जगह नहीं थी। कल्लू उन्हीं के घर के बाहर बना रहता, अपने दोस्तों को भी जमा कर लेता। उन्होंने मकान बदला तो कल्लू और उसकी मंडली भी उनके साथ चली। एक रात नए पड़ोसियों ने मंजू को बताया कि कुछ लोगों ने कल्लू पर गंडासे और लाठियों से हमला करके उसे घायल कर दिया है। वह कहती हैं, ''मैं सुबह चार बजे तक तिपहिया स्कूटर में बैठी उसे ढूंढती घूमती रही।'' आखिर उन्होंने एक पुराने पड़ोसी से, जिनके यहां कल्लू अक्सर जाता था, कहा कि कल्लू दिखे तो उन्हें सूचित कर दें। और वाकई कल्लू वहां आ गया। ''मैं उसे थ्रीव्हीलर में अपनी गोद में बिठाकर फ्रेंडिकोज़ में लाई। और इन लोगों ने उसकी जान बचा ली।'' कल्लू का मंजू सचदेवा के मुहल्ले में दिखना खतरे से खाली नहीं है, इसलिए वह फ्रेंडिकोज़ में ही उससे मिल लेती हैं। जब वह उससे विदा लेती हैं तो कल्लू उनकी

यू. ह्यूमेन सोसाइटी © यू. ह्यूमेन सोसाइटी

मा. सचदेवा © यू. ह्यूमेन सोसाइटी

बिल्कुल बाएं: अगस्त 2005 में कैटरीना समुद्री तूफान के बाद गल्फ़पोर्ट, मिसिसिपी में बाढ़ के चलते भरे पानी के बीच से अपने कुत्ते कडल्स के साथ जाते हुए जोनाथन हार्वे।

बाएं: चेन्नई, तमिलनाडु में मार्च 2005 में फिर से सुनामी की आशंका के चलते अपने तटीय घर को छोड़ चुकी वनाजा अपनी पालतू बिल्ली को अपने अस्थायी आवास बने टेंट में ले जाती हुई।

आर्ट मैक्स

रूथ मैक्स अपने पालतू जीव टिच और उसी की नस्ल और इलाके की 'वधू' के साथ।

गोद में मुंह छिपाकर रोता है। वह कहती हैं, ''मैं कुछ बड़ा मकान ढूंढ रही हूं। भगवान की दया से मैं कल्लू को घर ले जाऊंगी, इसे छोड़ूंगी नहीं।''

अपने पालतू पशुओं को बच्चों की तरह पालने वालों में आर्ट और रूथ मैक्स का नाम काफी ऊपर होगा। 1990 से 2000 के बीच दिल्ली में रहते उन्होंने जैक रसेल टैरियर नस्ल के कुत्ते टिच के लिए उसी की नस्ल और इलाके की साथिन तलाश करवाई। टिच आयरलैंड में जन्मा और स्वीडन में पला-बढ़ा था जहां मैक्स दम्पत्ति ने अपने विवाह के कुछ समय बाद ही उसे एक मित्र से गोद लिया। रूथ याद करती हैं,''टिच हमारे साथ सब जगह जाता था- तैरने, स्कीइंग करने, मछली पकड़ने, नाव चलाने। यहां तक कि लोग डिनर के निमंत्रण पत्र पर भी आर्ट, मेरा और टिच का नाम लिखते।''

आर्ट मैक्स द एसोसिएटेड प्रेस की दक्षिण एशिया सेवा के प्रमुख बनकर नई दिल्ली आए तो टिच भी मैक्स दम्पत्ति के साथ पहले एक महीने पांचतारा होटल में रहा। अब नीदरलैंड में बस गई कोलकाता में जन्मी स्वतंत्र लेखिका, उद्यमी रूथ मैक्स बताती हैं, ''रोज़ सुबह होटल की रसोई से फोन आता, आज टिच क्या खाना पसन्द करेगा?'' और थोड़ी देर बाद दरवाज़े पर दस्तक होती, रूम सर्विस करने वाला कर्मचारी चांदी की थाली में उसका खाना लिए हाजिर होता।

एक दिन उनके एक मित्र हवाई सफर के काम आने वाले थैले में टिच की 'नसीबों से मिली, दूर से आई' दुल्हन चिंजू को लिए भारत आए। टिच तो उसे देखते ही फिदा हो गया। लेकिन मैक्स दम्पत्ति की तिब्बती रसोईदारिन दोरजी के साथ ज़्यादा समय बिताने पर टिच और चिंजू ने पाला बदल लिया। श्रीमती मैक्स कहती हैं, ''वे घंटों रसोई में मूढ़ों पर बैठे दोरजी को खाना पकाते देखते रहते- और उसमें से काफी खाना उन्हें मिलता। जब हम 1990 में यहां आए तो शीघ्र ही दोरजी हमारे यहां काम करने लगी थी। उसे जल्द ही यकीन हो गया कि उसका और टिच का पूर्व जन्म का नाता था।''

ज़्यादा जानकारी के लिए:

फ्रेंडिकोज
www.friendicoesseca.org

पीपल फ़ॉर एनीमल्स
www.peopleforanimalsindia.org

द ह्यूमेन सोसायटी ऑफ़ युनाइटेड स्टेट्स
http://www.hsus.org

सोसायटी फ़ॉर द प्रिवेंशन ऑफ़ क्रूएल्टी टू एनीमल्स
www.spca.com